Vol.-VII No.-2

Wisdom Herald

An International Research Journal of SITBS

SOCIETY FOR INDO-TIBETAN BUDDHIST STUDIES
Laxminagar, New Delhi (INDIA)

Scanned with CamScanner

Reg. No. V-41950

ISSN 2231 1483

Wisdom Herald

An International Research Journal of SITBS

Vol-VII No.-2 Apr-Jun, 2016

Chief -Editor
Prof. Shyam Nath Mishra

Editor
Dr. Jyoti Dubey

Published by
Society for Indo-Tibetan Buddhist Studies
Laxminagar. New Delhi (INDIA)

Scanned with CamScanner

कुमारसम्भवम् महाकाव्य में वृक्ष

प्रो. अर्चना दुवे*

भुर्ज वृक्ष – कालिदास ने हाथी के सूँड पर बने पद्मक-बिन्दुओं जैसी भूर्ज-त्वक् का वर्णन किया है। जिस पर विद्याधरियाँ प्रेम पत्र लिखी करती थी—-

न्यस्ताक्षरा धातुरसेन यत्र, भूर्जत्वचः कुञ्जराविन्दुशोणाः ।
व्रर्जान्ते विद्याधरसुन्दरीणामनङ्गलेखक्रिययोपयोगम् ।।[1]

तथा शिव के गण उसे वस्त्र रूप में धारण करते थे।

गणा नमेरूप्रसववतंसा भूर्जत्वचः स्पर्शवतीर्दधानाः ।
मनः शिलाविच्छुरिता निषेदुः शैलयनद्धेषु शिलातलेषु ।।[2]

देवदारू वृक्ष[3] – भागीरथी निर्झर के जलकणों से युक्त वायु द्वारा कम्पित देवदारु वृक्षों वाले हिमालय को कवि ने प्रांशु देवदारू बृहद्भुजः अर्थात् उन्नत देवदारू रूपी विशाल भुजाओं वाला कहा है। शिव के तपोवन में गंगा प्रवाह से सिंचित देवदारू है। जिनके नीचे बैठकर शिव समाधि लगाते हैं –

स देवदारू-द्रुम-वेदिकायाम शार्दूलचर्मव्यवधानवत्याम्।—
आसीनमासन्नशरीरपातस्त्रियम्बकं संयमिनं ददर्श ।।[4]

सरल वृक्ष – हिमालय में हाथियों द्वारा सरलवृक्षों पर कपोल घर्षण करने से पर्वत शिखरों को सुरभित कर देने वाले क्षीर के स्रावित होने का वर्णन किया है –

कपोलकण्डूः करभिर्विनेतु, विघट्टितानां सरलद्रुमाणां।
यत्र स्रुतक्षीरतया प्रसूतः सानूनि गन्धः सुरभी करोति ।।[5]

इससे ज्ञात होता है कि सरल विशाल वृक्ष है, जिसके तने से आघात होने पर सुगन्धित द्रव निकलता है।

कमल – हिमालय के उपरिवर्ती जलाशयों में जलीय पादप कमल की विद्यमानता का निरूपण किया गया है–

सप्तर्षिहस्तावाचितावशेषाण्यधो विवस्वान्परिवर्तमानः ।
पद्मानि यस्याऽग्रसरोरूहाणि प्रवोधयत्यूर्ध्वमुखैर्मयूरवैः ।।[6]

---

*श्रीसोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय राजेन्द्र भुवन रोड़, वेरावल, जिला गीर सोमनाथ, गुजरात 362265

Scanned with CamScanner

गौरी शिखर के सरोवर हेमन्त काल में तुषार वृष्टि-क्षत- पद्मसम्पदा वाले होते है तथा गन्धमादन वन में कमल कुमुदादि का बहुशः उल्लेख किया गया है (8.32,33,39,70)।

अशोक वृक्ष – कामदेव के प्रभाव से अकाल-वसन्त का आगमन होने पर दोह-दापेक्षा के बिना ही अशोक तत्काल पुष्पित-पल्लवित हो उठा–

असूत सद्यः कुसुमान्यशोकः स्कन्धात्प्रभृत्येव सपल्लवानि।
पादेन नापैक्षत सुन्दरीणां सम्पर्कमासिञ्जितपुरेण ॥[7]

नमेरु वृक्ष - शिव तपोवन में प्रवेश स्थल पर नमेरु का सघन वृक्ष स्थित है, जहाँ शिव पर शर - संधान के लिए कामदेव छुप कर बैठता है –

दृष्टिप्रपातं परिहृत्य तस्य कामः पुरः शुक्रमिव प्रयाणे।
प्रान्तेषु संसक्तमेरुशाखं ध्यानास्पदं भूतपतेर्विवेश ॥[8]

कुमारसम्भवम् में टीकाकार मल्लिनाथ के अनुसार नमेरु रुद्राक्ष वृक्ष है, जिसके फल सुप्रसिद्ध रूद्राक्ष और पुष्प पिन कुशन के आकार के होते हैं।[9]

लोध्र वृक्ष – पीले-सुगन्धित पुष्पों वाले लोध्र के मध्यमाकार वृक्ष भारत में सर्वत्र पाए जाते हैं। प्राचीनकाल में लोध्र कल्क उपयोगी सौन्दर्य सामग्री होती थी।

कर्णार्पितो लोध्रकषायरूक्षे गोरोचनाक्षेपनितान्तगौरे।
तस्याः कपोले परभागलाभाद चक्षर्षि यवप्ररोहः ॥[10]

सल्लकी – इन ऊँचे अथवा मध्यमाकार वृक्षों की छोटी शाखाओं और पत्तों को मसलने पर विशेष गन्ध उत्पन्न होती है। कालिदास ने इनका उल्लेख गन्धमादन वन में हाथियों के प्रिय भोजन के रूप में किया –

स्थानमाह्निकमपास्य दन्तिनः सल्लकीविटपभङ्गवासितम्।
आविभातचरणाय गृह्णते वारि वरिरुहबद्धषटपदम् ॥[11]

यव – लंबे पतले पत्तों वाली यह तृणजातीय वनस्पति भारत की प्रमुख ग्रीष्मकालीन फसल है, जिसके अंकुर लाभप्रद माने जाते हैं –

कर्णापितों लोध्रकपायरूक्षे गोरोचनाक्षेपनितान्तगौरे।
तस्याः कपोले परभागलाभाद् ववन्धचक्षूँषि यवप्ररोहः ॥[12]

नीवार - तपोवन वासियों द्वारा खाद्यान के रूप में प्रयुक्त किया जाता है–

अरण्यवीजाञ्जलिदानलालितास्तथा च तस्यां हरिणा विशश्वसुः।
यथा तदीयैर्नयनैः कुतूहलात् पुरः सखीनामामिमीत लोचने ॥[13]

सुश्रुत ने इसे कुद्यान्य[14] कहा है– **कोरदूषक श्यामक नीवार कुधान्य-विशेषा** कालिदास के अनुसार यह शुक का भोजन तथा मंगल-क्रियोपयोगी होता है

दूर्वा - यह तृणजातीय, बहुवर्षायी, सर्वत्र उपलब्ध वनस्पति मंगल कार्यों में प्रयुक्त होती है। तथा अनन्ता, हरिता, शतपर्वा, बहुवीर्या कहलाती है।[15]

धूपोष्मणा त्याजितमार्द्रभावं केशान्तमन्तः कुसुमं तदीयम्।
पर्याक्षिपत्काचिदुदारवन्धं दूर्वावता पाण्डुमधूकदाम्ना ॥[16]

गौरा सिद्धार्थक – यह सरसों का ही एक प्रकार है।[17] इसका क्षुप लगभग 1-15 फीट उँचा होता है। यह उत्तर भारत की प्रमुख तिलहन फसल है। इसे अत्यन्त मांगलिक माना जाता है –

सा गौरसिद्धार्थनिवेशवद्भिर्दूर्वाप्रवालैः प्रतिभिन्नशोभम्।
निर्नाभिकौशेयमुपात्तवाणमभ्यङ्गनेपथ्यसलञ्चकार ॥[18]

दर्भ - मुंज जाति की इस वन्य घास की जड़ में तीखे कांटे से होते है। इसके पत्र लम्बे पतले नुकीले होते है। और इसे उखाड़ते समय इनकी खड़गवत् तीखी धार से आहत होने की संभावना भी रहती है –

विसृष्टरागधरान्निवर्तितः स्तनाङ्गरागारूणिताच्च कन्दुकात्।
कुशाङ्कुरादानपरिक्षताङ्गुलिः कृतोऽक्षसूत्रप्रणयी तथा करः ॥[19]

कीचक वृक्ष - पश्चिम तथा मध्य हिमालय के निचले शुष्क वनों में बॉस के अनेकानेक शुष्क जातियाँ बहुतायात से मिलती है। कालिदास के अनुसार हिमालय गुहारूपी मुख से निकलती वायु द्वारा कीचकों के छिद्रों को भरता हुआ मानो देवगायक किन्नरों का वेणवादन द्वारा स्वरसंगत प्रदान करता है।

यः पूरयन कीचकरन्ध्रभागान् दरीमुखोत्थेन समीरणेन।
उद्गास्यतांमिच्छति किन्नराणां तानप्रदायित्वमिवोपगन्तुम् ॥[20]

कर्णिकार – अधिकांश संस्कृत शब्दकोशें में इसे द्रुमोत्पल कहा गया है।[21] कालिदास के अनुसार कर्णिकार का पुष्प काल वसन्त ऋतु है। सुन्दर तथा निर्गन्ध पुष्पों वाला यह वृक्ष हिमालय पर मिलता है –

वर्णप्रकर्षे सति कर्णिकारे दुनोति निर्गन्धतया स्म चेतः।
प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां पराङ् मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः। [22]

आम्र – यह विशाल सदाहरित, सघन छायादार वृक्ष सम्पूर्ण भारत में प्रचुरतया मिलता है। वसन्तारंम्भ से यह छोटे श्वेत् ललाम-हरिताभ से तीव्रगन्धी

Scanned with CamScanner

पुष्प गुच्छों से लद जाता है और ग्रीष्म काल में फल देता है। यह प्रायः बागों में उगाया जाता है। किन्तु इसकी जंगली किस्में भी होती है।

सद्यः प्रवालोद्गमाचारूपत्रे नीते समाप्तिं नवचूतवाणे।
निवेशयामास मधुद्विरेफान् नामाक्षराणीव मनोभवस्य ॥[23]

आम्रमञ्जरी – महाकवि कालिदास ने नव किसलययुक्त, नूतन आम्रमंजरी को कामदेव के बाण में सुशोभित किया है –

सद्यः प्रवालोद्गमचारूपत्रे नीते समाप्तिं नवचूतवाणे।
निवेशयामास माधूद्विरेफान् नामाक्षराणीव मनोभवस्य ॥[24]

(Footnotes)

1. कुमारसम्भवम् - 1/7
2. कुमारसम्भवम् - 1/55
3. कुमारसम्भवम् - 1/15, 6/51
4. कुमारसम्भवम् - 3/44
5. कुमारसम्भवम् - 1/9
6. कुमारसम्भवम् - 1/16
7. कुमारसम्भवम् - 3/25
8. कुमारसम्भवम् - 3/43
9. Sabnis, Kalidas, p.351, आजाद चन्द्रशेखर, महि ब पर्यावरण पृ.106
10. कुमारसम्भवम् - 7/17
11. कुमारसम्भवम् - 8/33
12. कुमारसम्भवम् - 7/17
13. कुमारसम्भवम् - 5/15
14. सुश्रुत संहिता 46/21
15. हलायुधकोश 191
16. अमरकोष, 2.9.17-18
17. कुमारसम्भवम् - 7/14
18. कुमारसम्भवम् - 7/7
19. कुमारसम्भवम् - 5/11
20. कुमारसम्भवम् - 1/8
21. अमरकोश 2.4.60 - भाव प्रकाश , पृ. 244, हलायुध 198-99
22. कुमारसम्भवम् - 3/28
23. कुमारसम्भवम् - 3/27
24. कुमारसम्भवम् - 3/27

Scanned with CamScanner